राजस्थान का रजवाड़ी संगीत
टॉड की जबानी

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

संगीत के प्रति जनरुचि बहुत काल से रही है। अनेकानेक छन्दोबद्ध गीतों को संगीत के साथ गाये जाने से कई राग–रागिनियों का विकास हुआ। इनका अभ्यास संगीत विद्या के उन्नयन में सहायक हुआ। रियासत काल में संगीत का जो स्वरूप था, वह जन–सामान्य से लेकर दरबारों तक रुचि के अनुसार ढला हुआ था और यथावसर पसंद किया जाता था।

कर्नल जेम्स टॉड ने राजस्थान के रियासती जीवन में प्रचलित संगीत का जो आंखों देखा परिचय दिया है, वह उस काल के रिपोर्ताज की छटा लिए है और कई दृष्टियों से रोचक है, अध्येताओं के लिए उसके संदर्भ उपयोगी है। यह 19वीं सदी थी और तब अवसरों के अनुसार संगीत का उपयोग होता था। संगीत युद्ध के लिए होता था, कुश्ती के लिए होता था, शस्त्रास्त्र प्रशिक्षण के दौरान होता था, शिकार के लिए भी होता था। टॉड ने लिखा है कि कितनी हैरतअंगेज बात है कि तब योद्धा के सारे ही मनोरंजन के साधन सामरिक प्रकृति के होते थे और उसकी वीरता के सिद्ध–सफल हो जाने पर जो नृत्य और संगीत होता, उससे भी उसकी वीरता उद्दीप्त होती। ऐसे संगीतमय उत्सव की पुष्टि उसने बूंदी की राजमाता के उस पत्र से की जिसमें उसके लाड़ले लाला द्वारा प्रथम शिकार के उत्सव का वर्णन किया था।

वह शासकों के संगीतप्रेमी होने के प्रसंग में पृथ्वीराज रासों का सन्दर्भ देता है और कहता है कि चन्द ने कहा है कि उसका नायक चौहान गेय एवं यांत्रिक संगीत कला का विशेषज्ञ था। टॉड ने यह भी कहा है कि राजकुमारों की शिक्षा में धर्म से इतर संगीत की शिक्षा का प्रचलन था अथवा नहीं, यह पता नहीं। धार्मिक संगीत उनकी शिक्षा का अंग था। रामायण महाकाव्य से राम और भाइयों के चरित गाये जाते हैं। जयदेव कृत गीत गोविंद के पद गाये जाते और चौबे उसके काल में भी अष्टपदी आदि गाते थे। अनेक मठों के अधिवासी अपने सर्वेश्वर के गीतों को गाते। टॉड ने आबू के शिखर पर साधुओं को पाटण के स्वामियों के गीत गाते हुए सुना था। धोली भाट के गीतों का उल्लेख मात्र करना, उनके साथ अन्याय होगा जो राजस्थान के चारणों के वीरकाव्य का गान करते हैं।

टॉड की भेंट मेवाड़ में महाराणा भीमसिंह के शासनकाल में महाराजा शिवदानसिंह से हुई जिनके लिए उसका मत है कि उसके परिवार के सदस्य सिंहासन के उत्तराधिकारी थे। शिवदानसिंह ने टॉड को भाई बनाया और इसी कारण वह देर तक उसके पास

फोटो सौजन्य : महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर

कर्नल टॉड

बैठा करते थे। वह अपने समय के मुख्य निशानेबाज थे और उन्हें पौराणिक साहित्य का अच्छा ज्ञान था। मेवाड़ ही नहीं, सम्पूर्ण रजवाड़े के इतिहास की भी उन्हें अच्छी जानकारी थी। वह कवियों की काव्यविद्या के विषय में जानते थे और हर विषय पर बोल सकते थे। उनको संगीत शास्त्र में निष्णात् थे तथा सभी प्रकार के संगीत पर उसकी विशिष्टता बताते हुए बोल सकते थे। शिवदानसिंह की मान्यता थी कि उन रागों का अभ्यास करना चाहिए जो पंचमुख शिव तथा उनकी पत्नी के मुख से निकले थे। प्रत्येक राग की छह रागिनियां मानी गई हैं। उनकी अपनी मण्डली थी जिसमें मेवाड़ के सर्वोत्तम संगीतकारों को चुनकर शामिल किया था। टॉड ने लिखा है कि शिवदानसिंह कभी–कभी उसे उस मण्डली का गायन–वादन सुनने का आग्रह करते थे।

टॉड ने संगीत के जिन पक्षों पर प्रकाश डाला है, वह निम्न बिन्दुओं पर आधारित है–

ऋतु के अनुसार रागानुराग

टॉड ने वर्ष की ऋतुओं के अनुसार संगीत के व्यवहार का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया था। उसने देखा कि संगीतकार दल बनाकर घूमा करते थे। ग्रीष्म ऋतु होती तो मकान की छतों पर कालीन बिछाए जाते जिन पर बैठकर वे अपना संगीत बजाते थे। तब 96वें डिग्री फैरेनहाइट की भीषण गर्मी का दिन बिताने के बाद झीलों में बहने वाली ठंडी हवा दिन की थकान को दूर कर देती थी। इस समय के गीतों का विषय प्रेम, गौरव और व्यंग्य आदि होते थे। टॉड ने लिखा है कि उसको कई सामंतों ने इन संगीत सभाओं में बुलाया लेकिन उसने महाराजा के समान विद्वान संगीतज्ञ किसी को नहीं पाया।

जन्मोत्सव आदि पर संगीत

परिवार में किसी प्रमुख का जन्मदिन या अन्य उत्सवों के दिन मुख्य वरदाई या किसी भी कबीले का वरदाई आता था। समस्त जन मौन होकर संगीत–गायन का कार्यक्रम सुनते और ऐसा मौन वाह–वाह की

गायकी प्रधान संगीत

उस काल में किसी भी अवसर पर सब लोग मौन होकर संगीत–गायन का कार्यक्रम सुनते और वाह–वाह करने पर ही मौन टूटा करता था। संतुलित रूप से सिर को हिलाने और मूंछों पर ताव देने से उनकी प्रशंसा या अप्रशंसा का भाव अभिव्यक्त होता था। शिवदान सिंह की प्रधान गायिका का स्वर बहुत मधुर था तथा वह कातिलानी के परिचित शब्द से पुकारी जाती थी। वह सभी बसंत और मेघ के रागों को पूरी तरह विचक्षणता के साथ गाती थी। उस कातिलानी की एक ही प्रतिस्पर्द्धी गायिका थीं और वह उज्जैन में रहती थी। इस पर टॉड ने सुझाव दिया था कि इन दोनों गायिकाओं को एक साथ रखा जाए ताकि दोनों में स्पर्द्धा की भावना से और अधिक उच्चता आ सके। ऐसे समारोह में सलूम्बर के सामंत प्रमुख और दूसरे लोग बार–बार हिस्सा लिया करते थे।